vinetur

समीक्षा में पाया गया कि PEth, शराब-सम्बंधित यकृत रोग की गैर-आक्रामक जांच को मजबूत बनाता है

पेपर के अनुसार हाल ही में शराब सेवन के वस्तुनिष्ठ माप निदान को बेहतर बना सकते हैं, पूर्वानुमान के आकलन को सुधार सकते हैं और लिवर बायोप्सी पर निर्भरता कम कर सकते हैं।

सोमवार, 21 सितंबर 2026



Current Hepatology Reports में प्रकाशित एक समीक्षा के अनुसार, शराब-सम्बंधित यकृत रोग में गैर-आक्रामक परीक्षणों की भूमिका बढ़ रही है, चाहे बात यकृत क्षति के निदान की हो या रोग के आगे बढ़ने की संभावना का आकलन करने की। पेपर का तर्क है कि ये उपकरण तब सबसे उपयोगी होते हैं जब उन्हें हालिया शराब सेवन के अधिक विश्वसनीय मापन के साथ जोड़ा जाए, जिसमें phosphatidylethanol, या PEth जैसे प्रत्यक्ष बायोमार्कर शामिल हैं।

Alcohol-related liver disease, जिसे अक्सर ARLD कहा जाता है, फैटी लिवर से लेकर hepatitis, fibrosis और cirrhosis तक फैला हुआ है। नियमित चिकित्सा देखभाल में डॉक्टरों के लिए सबसे कठिन समस्याओं में से एक यह है कि यह स्थिति दो चीज़ों पर निर्भर करती है जिन्हें सटीक रूप से मापना हमेशा आसान नहीं होता : मरीज कितनी शराब पी रहा है और लिवर के भीतर क्षति की सीमा कितनी है। समीक्षा कहती है कि गैर-आक्रामक तरीके इन दोनों मोर्चों पर मदद

कर सकते हैं, अधिक आक्रामक प्रक्रियाओं पर निर्भरता घटा सकते हैं और समय के साथ फॉलो-अप को बेहतर बना सकते हैं।

लेखकों के अनुसार यह क्षेत्र अब केवल मानक लिवर रक्त परीक्षणों तक सीमित नहीं रहा। मौजूदा प्रैक्टिस में अब लैबोरेटरी मार्करों को इमेजिंग उपकरणों के साथ जोड़ा जा रहा है, जो लिवर की कठोरता का अनुमान लगा सकते हैं; यह fibrosis और अधिक उन्नत रोग से जुड़ा संकेत है। ये तरीके उन मरीजों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं जिन्हें करीबी निगरानी, विशेषज्ञ रेफरल या जटिलताओं के उपचार की ज़रूरत है। ये तब होने वाले बदलावों पर नज़र रखने में भी मदद कर सकते हैं जब शराब सेवन घटता है या रोग बिगड़ता है।

समीक्षा का एक केंद्रीय बिंदु यह है कि शराब सेवन को मापना अब भी आवश्यक है और नैदानिक सेटिंग्स में अक्सर इसे कम आँका जाता है। स्वयं-रिपोर्ट किए गए drinking histories अब भी व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं, लेकिन कई कारणों से वे अधूरे या गलत हो सकते हैं, जिनमें कलंक, कमजोर स्मृति और यह अंतर शामिल है कि मरीज एक drink को कैसे परिभाषित करते हैं। पेपर इस आकलन को मजबूत करने के लिए प्रत्यक्ष बायोमार्करों को रेखांकित करता है। इनमें PEth इसलिए अलग दिखता है क्योंकि यह हालिया alcohol exposure का वस्तुनिष्ठ प्रमाण दे सकता है और self-report alone की तुलना में देखभाल संबंधी निर्णयों के लिए अधिक ठोस आधार दे सकता है।

यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि ARLD में उपचार संबंधी निर्णय शराब सेवन से गहराई से जुड़े होते हैं। यदि कोई मरीज भारी मात्रा में पीना जारी रखता है, तो progression, decompensation और मृत्यु का जोखिम बढ़ जाता है। यदि शराब सेवन घटता है या रुक जाता है, तो outlook बेहतर हो सकता है, कभी-कभी काफी हद तक। इसलिए एक ऐसा उपकरण जो चिकित्सकों को हालिया शराब सेवन की अधिक स्पष्ट तस्वीर दे, निदान और prognosis दोनों को प्रभावित कर सकता है। यह डॉक्टरों को यह तय करने में भी मदद कर सकता है कि क्या असामान्य लिवर निष्कर्ष ongoing alcohol injury, past heavy use या किसी अन्य यकृत रोग को दर्शाते हैं, जिसे अलग ध्यान की ज़रूरत है।

समीक्षा लिवर चिकित्सा में व्यापक बदलाव की ओर भी संकेत करती है। वर्षों तक लिवर बायोप्सी को रोग की गंभीरता निर्धारित करने का एक महत्वपूर्ण तरीका माना जाता था, लेकिन बायोप्सी आक्रामक होती है, कुछ जोखिम रखती है और कई मरीजों में बार-बार निगरानी के लिए व्यावहारिक नहीं है। गैर-आक्रामक परीक्षणों ने इसलिए ज़मीन बनाई है क्योंकि उन्हें अधिक आसानी से दोहराया जा सकता है और वे पहले हस्तक्षेप की अनुमति दे सकते हैं। शराब-सम्बंधित यकृत रोग में, जहाँ मरीजों को महीनों या वर्षों में क्रमिक आकलन की ज़रूरत हो सकती है, यह व्यावहारिक लाभ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

फिर भी, समीक्षा गैर-आक्रामक परीक्षण को नैदानिक विवेक का पूर्ण विकल्प नहीं बताती। परिणामों पर inflammation, हालिया drinking, obesity और अन्य स्थितियों का असर पड़ सकता है जो laboratory values या imaging findings को बदल देती हैं। लेखकों का तर्क, जैसा कि पेपर के शीर्षक और सारांश में झलकता है, यह नहीं है कि एक ही परीक्षण हर सवाल का जवाब दे सकता है, बल्कि यह कि तरीकों को मिलाकर देखभाल बेहतर की जा सकती है। इसमें लिवर क्षति का आकलन करने के लिए non-invasive measures का उपयोग करना शामिल है, साथ ही शराब सेवन के मापन को भी बेहतर बनाना शामिल है।

यह पेपर उस बढ़ते शोध-समूह में जुड़ता है जो शराब-सम्बंधित यकृत रोग को ऐसे रोग के रूप में देखता है, जिसके लिए अधिक सटीक निगरानी उपकरणों की ज़रूरत है, न सिर्फ़ देर-चरण की जटिलताओं के लिए बल्कि रोग के पहले चरणों में भी। जल्दी पहचान महत्वपूर्ण है, क्योंकि कई मरीज तब चिकित्सा ध्यान में आते हैं जब क्षति पहले ही उन्नत हो चुकी होती है। बेहतर स्क्रीनिंग और फॉलो-अप उपकरण जोखिम को जल्दी पकड़ने में मदद कर सकते हैं, खासकर उन लोगों में जिनकी लिवर बीमारी अन्यथा अनदेखी रह सकती है।

इन निष्कर्षों का असर हेपेटोलॉजी क्लीनिकों से आगे भी हो सकता है। जैसे-जैसे alcohol harm के आसपास का evidence base अधिक विस्तृत और अधिक वस्तुनिष्ठ होता जाएगा, यह सार्वजनिक स्वास्थ्य बहसों, उपचार दिशानिर्देशों और

रोकथाम रणनीतियों को आकार दे सकता है। इससे wine, beer और spirits के निर्माता और विक्रेता पर परोक्ष प्रभाव पड़ सकता है, खासकर यदि भविष्य की बहसों में labeling, screening, marketing या alcohol policy पर अधिक मज़बूत नैदानिक साक्ष्य का उपयोग किया जाता है। समीक्षा स्वयं चिकित्सा पर केंद्रित है, लेकिन इसमें जिन तरीकों पर चर्चा की गई है, वे व्यापक स्वास्थ्य प्रणालियों में alcohol-related harm के दस्तावेजीकरण को प्रभावित कर सकते हैं।

एक और निहितार्थ research quality से जुड़ा है। शराब-सम्बंधित यकृत रोग पर अध्ययन अक्सर इस बात पर निर्भर करते हैं कि प्रतिभागियों ने कितनी शराब पी है, लेकिन गलत रिपोर्टिंग नतीजों को कमजोर कर सकती है। यदि PEth जैसे बायोमार्कर अधिक बार उपयोग किए जाएँ, तो शोधकर्ता exposure को अधिक सटीक रूप से वर्गीकृत कर सकेंगे और outcomes की तुलना अधिक भरोसे के साथ कर सकेंगे। इससे prognosis, treatment response और relapse पर भविष्य के अध्ययन अधिक विश्वसनीय हो सकते हैं।

समीक्षा में prognosis पर दिया गया जोर भी महत्वपूर्ण है। यकृत रोग में prognosis केवल इस पर नहीं होता कि क्षति मौजूद है या नहीं, बल्कि इस पर भी होता है कि क्या मरीज portal hypertension, liver failure या hospitalization जैसे गंभीर घटनाक्रमों की ओर बढ़ रहा है। fibrosis और उससे जुड़े बदलावों का अनुमान लगाने वाले गैर-आक्रामक उपकरण डॉक्टरों को यह पहचानने में मदद कर सकते हैं कि किन मरीजों पर सबसे अधिक जोखिम है। व्यवहार में, इससे निगरानी की तीव्रता, अतिरिक्त परीक्षणों की आवश्यकता और alcohol treatment तथा लंबी अवधि की देखभाल पर बातचीत प्रभावित हो सकती है।

शराब मापन और लिवर मूल्यांकन को एक ही ढांचे में रखकर, यह लेख एक ऐसी बात को रेखांकित करता है जिसका सामना चिकित्सक लंबे समय से व्यवहार में करते आए हैं: शराब-सम्बंधित यकृत रोग का प्रबंधन करने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि लिवर कैसा दिखता है और मरीज ने हाल में क्या सेवन किया है। समीक्षा का तर्क है कि गैर-आक्रामक परीक्षण तब अधिक उपयोगी होते जा रहे हैं जब उन्हें इस संयुक्त तरीके से इस्तेमाल किया जाए, और PEth जैसे प्रत्यक्ष बायोमार्कर alcohol exposure के आकलन में लंबे समय से मौजूद एक अंतर को भरने में मदद करते हैं।